Content

विषाय-सूची

नम्र निवेदन पृ. 1-2
विषाय प्रवेश 1-10
शोध की मौलिकता तथा सीमायें
शोध सामग्री के स्त्रोत
ज्ञान के विस्तार में प्रस्तुत प्रबन्ध का योगदान ।

अध्याय -१ पृ. 1-32

भारतीय वांङ्मय में राम काव्य की विशेषाता तथा हिन्दी रामकाव्य परम्परा, भारतीय वांङ्मय की प्राचीनता, श्रीराम का प्रेरक व्यक्तित्व तथा उनके चरित्र का भारतीय वांङ्मय पर प्रभाव, राम काव्य की विशेषाता

(अ) भारतीय जीवन दर्शन की सफल प्रतिष्ठा
(आ) अभ्युदय और नि:श्रेयस का अपूर्व समन्वय
(इ) मानवता की उदात्त भावना
(ई) वैयक्तिक तथा सामूहिक जीवन से समन्वित लोक धर्म की सफल अभिव्यक्ति ।
(उ) विभिन्न काव्य शैलियों का प्रयोग

हिन्दी रामकाव्य- परम्परा ।

(१) संस्कृत, प्राकृत , अपभ्रंश साहित्य में राम काव्य का रूप तथा हिन्दी राम काव्य पर उसका प्रभाव ।
(२) वाल्मीकि रामायण में मूल राम कथा का रूप ।
(३) हिन्दी राम काव्य की प्रथम प्रबन्धात्मक रचना ।
(४) रामचरित मानस की रचना तथा हिन्दी राम काव्य का उत्थान ।
(५) मानस पूर्ववर्ती प्रबन्धात्मक राम काव्य
(६) मानस परवर्ती प्रबन्धात्मक रामकाव्य
(७) निष्कर्ष

अध्याय -२ पृष्ठ. ३३-६४

हिन्दी-प्रबन्धात्मक राम-काव्यों का वर्गीकरण

(१) प्रबन्धात्मक राम काव्यों के वर्गीकरण का आधार ।
(क) काव्य रूपों के आधार पर
(ख) शैली के आधार पर
(ग) प्रयोजन तथा उद्देश्य के आधार पर
(घ) वस्तु संगठन के आधार पर
(२) उपलब्ध रचनाओं - का संक्षिप्त परिचय

अध्याय- ३ पृ. ६५.१४७

रघुवंश दीपक और उसके रचयिता
(अ) रघुवंश दीपक का प्रारम्भिक परिचय
(आ) रचना काल
(इ) रचना स्थल
(ई) रचयिता का परिचय
१- अन्त:साक्ष्य २- वाह्य साक्ष्य
(उ) रघुवंश दीपक की रचना की प्रेरणा
(ऊ) रचना के मूल स्त्रोत
(ए) रचना का उद्देश्य
(ऐ) नवीनता :( ) निष्कर्ष

अध्याय-४ पृ. १४८ - १७४

रघुवंश दीपक का वस्तु विन्यास
(१) रघुवंश दीपक की कथावस्तु
(२) आधिकारिक तथा प्रासंगिक कथाओं का संयोजन
(३) वस्तु संगठन में कवि का कौशल
(४) वस्तु संगठन के दोष तथा असंगतियां
(५) निष्कर्ष तथा उपलब्धियां

अध्याय-५ पृ. १६५- २०९

रघुवंश दीपक की प्रबन्धात्मकता तथा महाकाव्यत्व,प्रबन्ध की प्रबन्धात्मकता के मूल तत्व

महाकाव्य की परिभाषा तथा उसके आवश्यक तत्व

(१) कथानक

(अ) इतिवृत्त

(आ)कथा विस्तार तथा खण्ड विभाजन

(इ) छन्दोबद्धता

(ई) सम्बन्ध निर्वाह

(२) चरित्र सृष्टि - जीवन के विविध और समग्र रूप का चित्रण

(३) वस्तु व्यापार वर्णन

(४) भाव व्यंजना ,कथा के गम्भीर और मार्मिक स्थलों की पहिचान

(५) शैली

(६) उद्देश्य

अध्याय- ६ पृ. २१०-२६४

रघुवंश दीपक में चरित्र चित्रण

काव्य में चरित्र चित्रण का महत्व

रघुवंश दीपक में चरित्र विधान का आधार

विशिष्ट तथा सामान्य चरित्र

नायक, प्रतिपक्ष का विधान

प्रमुख पात्रों के चरित्र चित्रण

चरित्र चित्रण में कवि की उपलब्धि

नवीन उद्भावनायें

निष्कर्ष

अध्याय-७ पृ. २६५-३०५

रघुवंश दीपक में कला सौष्ठव

कवि का काव्य विषयक दृष्टिकोण

रघुवंश दीपक की भाषा, शब्द, भण्डार, अलंकार, छन्द विधान, शैली

काव्यगत उत्कृष्टता तथा कवि की उपलब्धि

कलात्मक उत्कृष्टता

निष्कर्ष

अध्याय-८ पृ. ३१०-३४७

रघुवंश दीपक में व्यंजित भक्ति का स्वरूप तथा दार्शनिक विचार

कवि की वैयक्तिक उपासना का रूप

भक्ति की परिभाषा

गोस्वामी तुलसीदास जी की भक्ति पद्धति का संक्षिप्त परिचय

रघुवंश दीपक में व्यंजित भक्ति का स्वरूप, रसिक भावना की झलक

रघुवंश दीपक में कवि के दार्शनिक विचार -

ब्रह्म-जीव, जगत, मायादि सम्बन्धी विचार ।

कवि मूलत: भक्त था दार्शनिक नहीं ।

अध्याय-९ पृ. ३४८-३५५.

उपसंहार, मूल्यांकन, रघुवंश दीपक का हिन्दी साहित्य में स्थान

रघुवंश दीपक तथा रामचरित मानस

रघुवंश दीपक तथा रामचन्द्रिका

रघुवंश दीपक तथा अन्य प्रबन्धात्मक -

रामकाव्य, हिन्दी राम काव्य धारा में रघुवंश दीपक का स्थान,

भावी अध्ययन की सम्भावनायें ।

परिशिष्ट -१ पृ. ३५६

रघुवंश दीपक के प्रकाशक का लेखक को पत्र

परिशिष्ट-२ पृ. ३५७-३६२.

सहायक ग्रन्थों की सूची ।